पाठ – आदमी का अनुपात

कविता का सार

- कवि बताते हैं कि मनुष्य और पृथ्वी इस ब्रह्मांड की विशालता के सामने बहुत छोटे हैं।
- दो व्यक्ति एक कमरे में रहते हैं, पर वे भी झगड़ा और अलगाव पैदा कर लेते हैं।
- कमरा घर का हिस्सा है, घर मोहल्ले का, मोहल्ला नगर का, नगर प्रदेश का, प्रदेश देश का और देश पूरी पृथ्वी का।
- पृथ्वी करोड़ों ग्रह-नक्षत्रों में छोटी-सी है, पर यही जीवनदायिनी है।
- यह पूरी पृथ्वी भी आकाशगंगा (नभगंगा) का एक अंश है और अनगिनत ब्रह्मांडों में इसकी स्थिति बहुत सूक्ष्म है।

कवि का संदेश

- मनुष्य को यह समझना चाहिए कि वह ब्रह्मांड की तुलना में बहुत छोटा है।
- छोटे होने पर भी इंसान के भीतर अहंकार, नफरत, ईर्ष्या और स्वार्थ भरे हुए हैं।
- इंसान अपने चारों ओर दीवारें बनाता है और खुद को दूसरों से अलग और बड़ा मानता है।
- कविता हमें सिखाती है कि हमें मिल-जुलकर, प्रेम और विश्वास के साथ रहना चाहिए।
- वास्तविक अनुपात यह है कि मनुष्य बहुत छोटा है, पर उसका आपसी सहयोग और भाईचारा ही उसे बड़ा बनाता है।

व्याख्या

1. दो व्यक्ति कमरे में
   कमरे से छोटे-
   कमरा है घर में
   घर है मुहल्ले में
   मुहल्ला नगर में
   नगर है प्रदेश में
   प्रदेश कई देश में
   देश कई पृथ्वी पर

व्याख्या – *उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि दो व्यक्ति एक कमरे में रहते हैं, और वे आकार में उस कमरे से छोटे हैं। वह चारों ओर से दीवारों से घिरा छायादार कक्ष एक घर का हिस्सा मात्र है, वह घर मोहल्ले अर्थात कस्बे का एक भाग है, मोहल्ला नगर अर्थात शहर में है, नगर प्रदेश अर्थात राज्य में है, प्रदेश देश में है और कई देश मिलकर एक पृथ्वी पर स्थित हैं। उपरोक्त पंक्तियों से पता चलता है कि मनुष्य इस विशाल दुनिया का बस एक बहुत छोटा सा हिस्सा मात्र है।*

2. अनगिन नक्षत्रों में
   पृथ्वी एक छोटी
   करोड़ों में एक ही

सबको समेटे है
परिधि नभ गंगा की
लाखों ब्रह्मांडों में
अपना एक ब्रह्मांड
हर ब्रह्मांड में
कितनी ही पृथ्वियाँ
कितनी ही भूमियाँ
कितनी ही सृष्टियाँ"
यह है अनुपात

शब्दार्थ –

अनगिन	–	जिनकी गिनती न की जा सके
नक्षत्र	–	आकाश में चमकने वाले तारे या तारामंडल
परिधि	–	बाहरी सीमा, गोल घेरा, वृत्त की रेखा
नभ	–	आकाश, गगन, अंबर
ब्रह्मांड	–	जिसमें कई आकाशगंगाएँ और ग्रह शामिल हैं या सम्पूर्ण सृष्टि
सृष्टि	–	जगत, विश्व, संसार
अनुपात	–	कोई चीज़ दूसरी चीज़ के साथ तुलना या माप का संबंध

व्याख्या – *उपरोक्त पंक्तियों में कवि बताते हैं कि आकाश में चमकने वाले अनगिनत तारों और ग्रहों में हमारी पृथ्वी बहुत छोटी सी है, परन्तु उन करोड़ों तारों और ग्रहों में केवल पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जो सभी प्राणियों को अपने अंदर समेटे हुए है। यह पृथ्वी अंतरिक्ष में स्थित आकाशगंगा (नभ गंगा) के गोल घेरे का हिस्सा है, जिसमें अनगिनत तारे व् ग्रह हैं। इसके अलावा, अंतरिक्ष में लाखों ब्रह्मांड हैं, और हर ब्रह्मांड की अपनी कई पृथ्वियाँ, भूमियाँ और सृष्टियाँ हैं। यह "अनुपात"है, जो दिखाता है कि मनुष्य और उसकी पृथ्वी, इस ब्रह्मांड की विशालता के समक्ष कितने छोटे हैं।*

3. आदमी का विराट से
इस पर भी आदमी
ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास
संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
अपने को दूजे का स्वामी बताता है
देशों की कौन कहे
एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है

शब्दार्थ –

विराट	–	बहुत बड़ा या विशाल
ईर्ष्या	–	द्वेष, दूसरों की उपलब्धियों या खुशियों से जलन

अहं – अहंकार, गर्व, घमंड, अकड़
स्वार्थ – वह सोच जो केवल अपने हित के लिए हो
घृणा – नफरत या घिन
अविश्वास – भरोसे का अभाव, शंका, संदेह
संख्यातीत – बहुत, अनगिनत, असंख्य
शंख – समुद्र में उत्पन्न एक जंतु
दूजे – दूसरा
रचाता है – बनाता है, निर्मित करता है

व्याख्या – *उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि यह ब्रह्मांड मनुष्यों से बहुत विशाल है। इतने विशाल ब्रह्मांड में छोटा-सा होने के बावजूद भी मनुष्य के भीतर दूसरों की उपलब्धियों या खुशियों से जलन, अहंकार, स्वार्थ, नफरत और अविश्वास या संदेह भरे हुए हैं। वह अपने चारों ओर परत-दर-परत इस तरह दीवारें खड़ी करता जाता है, मानो वह अपने आप को दूसरों से अलग और बड़ा मानता है। वह खुद को दूसरों का मालिक समझता है। देशों के बीच तो दूरी सभी समझते ही है, पर एक छोटे से कमरे में रहने वाले दो मनुष्य भी अपनी-अपनी अलग दुनिया बना लेते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने आप को दूसरे से अलग और बड़ा समझता है, जिस वजह से एक कमरे में रहने वाले दो व्यक्ति भी मिल-जुल कर नहीं रह पाते।*

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1. कविता के अनुसार ब्रह्मांड में मानव का स्थान कैसा है?
- पृथ्वी पर सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण
- ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म
- सूर्य, चंद्र आदि सभी नक्षत्रों से बड़ा
- समस्त प्रकृति पर शासन करने वाला

उत्तर:
- ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म (★)

प्रश्न 2. कविता में मुख्य रूप से किन दो वस्तुओं के अनुपात को दिखाया गया है?
- पृथ्वी और सूर्य
- देश और नगर
- घर और कमरा
- मानव और ब्रह्मांड

उत्तर:
- मानव और ब्रह्मांड (★)

प्रश्न 3. कविता के अनुसार मानव किन भावों और कार्यों में लिप्त रहता है?

- त्याग, ज्ञान और प्रेम में
- सेवा और परोपकार में
- ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में
- उदारता, धर्म और न्याय में

उत्तर:

- ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में (★)

प्रश्न 4. कविता के अनुसार मानव का सबसे बड़ा दोष क्या है?

- वह अपनी सीमाओं और दुर्बलताओं को नहीं समझता।
- वह दूसरों पर शासन स्थापित करना चाहता है।
- वह प्रकृति के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता है।
- वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है।

उत्तर:

- वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है। (★)

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं करें।

पंक्तियों पर चर्चा

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। अपने समूह में इनके अर्थ पर चर्चा कीजिए और लिखिए-

(क) "अनगिन नक्षत्रों में / पृथ्वी एक छोटी /करोड़ों में एक ही।"

उत्तर:

अनेक तारा समूहों और ग्रहों के बीच हमारी पृथ्वी एक छोटी-सी इकाई है । हमारा पूरा ग्रह भी अनंत ब्रह्मांड के विशाल विस्तार में छोटा है।

(ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है / अपने को दूजे का स्वामी बताता है" ।

उत्तर:

मनुष्य ने अपने को दूसरे मनुष्य से अलग कर लिया है। वह भेद-भाव और मनमुटाव के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है। अविश्वास और कटुता को बढ़ाता है। खुद को दूसरों से बेहतर साबित करने के चक्कर में मनुष्य बुराई के रास्ते पर चल रहा है।

(ग) “देशों की कौन कहे / एक कमरे में / दो दुनिया रचाता है।”

उत्तर:

ईश्वर ने सबको बनाया है और उसके लिए सब समान हैं परंतु मनुष्य तो इस सत्य को अनदेखा कर बैठा है। देश और दुनिया की छोड़ो, उसने तो अपने परिवार और संबंधों को भी धोखा देकर, अलग दुनिया में जीता है।

मिलकर करें मिलान

नीचे दो स्तंभ दिए गए हैं। अपने समूह में चर्चा करके स्तंभ 1 की पंक्तियों का मिलान स्तंभ 2 में दिए गए सही अर्थ से कीजिए।

उत्तर:

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	संख्यातीत शंख सी दीवारें	1. ब्रह्मांड की विशालता का प्रतीक
2.	पृथ्वी एक छोटी, करोड़ों में एक	2. आदमी के संकुचित होने का प्रतीक
3.	ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा	3. मनुष्य द्वारा खींची गई कृत्रिम सीमाएँ
4.	दो व्यक्ति कमरे में / कमरे से छोटे	4. सीमित स्थान में भी और अलगाव की प्रवृत्ति
5.	परिधि नभ गंगा की	5. पृथ्वी की अल्पता और अनोखेपन की ओर संकेत
6.	एक कमरे में दो दुनिया रचाता	6. मनुष्य की नकारात्मक भावनाएँ

अनुपात

इस कविता में ‘मानव’ और ‘ब्रह्मांड’ के उदाहरण द्वारा व्यक्ति के अल्पत्व और सृष्टि की विशालता के अनुपात को दिखाया गया है। अपने साथियों के साथ मिलकर विचार कीजिए कि मानव को ब्रह्मांड जैसा विस्तार पाने के लिए इनमें से किन-किन गुणों या मूल्यों की आवश्यकता होगी? आपने ये गुण क्यों चुने, यह भी साझा कीजिए।

उत्तर:

मनुष्य को अपनी सोच को ब्रह्मांड की तरह व्यापक बनानी चाहिए। सृष्टि की विशालता से प्रेरणा लेकर मनुष्य को सार्थक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। सहअस्तित्व, समावेशिता, सौहार्द, सहयोग और सहनशीलता के गुण अपनाकर मनुष्य भी जीवन को और सुंदर बना सकता है। ईश्वर ने मनुष्य को असीम बुद्धि प्रदान की है और बुद्धि के सदुपयोग से मनुष्य नई ऊँचाइयाँ छू सकता है।

सकारात्मक सोच और स्वभाव से हम सच्ची सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छे गुणों को अपनाने से न केवल हमारा जीवन बेहतर होगा, बल्कि हम एक बेहतर देश और दुनिया के निर्माण में भी योगदान दे सकेंगे।

सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) कविता के अनुसार मानव किन कारणों से स्वयं को सीमाओं में बाँधता चला जाता है?

उत्तर:

मनुष्य कई कारणों से स्वयं को सीमित कर लेता है और अपने परिवार, समाज, देश और दुनिया से दूर हो जाता है। इसमें अहंकार, स्वार्थ, ईर्ष्या, विद्वेष, घृणा जैसी भावनाएँ शामिल हैं। ऐसी भावनाएँ या अवगुण मानव को दूसरों से अलग रहने और उन्हें अपने से तुच्छ, समझने की ओर ले जाती हैं। मनुष्य संबंधों के महत्व को नहीं समझ पाता और अपने अहंकार या स्वार्थ को पूरा करने में लगा रहता है।

(ख) यदि आपको इस कविता की एक पंक्ति को दीवार पर लिखना हो, जो आपको प्रतिदिन प्रेरित करें तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

उत्तर:

अपने को दूजे का स्वामी बताता है
देशों की कौन कहे
एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है

कविता की उपर्युक्त पंक्तियाँ मैं दीवार पर लिखना चाहूँगी क्योंकि मानव अपने छोटेपन को भूलकर अहंकारी और अति आत्मविश्वासी हो जाता है। यदि परिवार के सदस्यों के साथ ही प्रेम और सामंजस्य नहीं है तो हम देश और दुनिया को क्या सीख देंगे। ऊपर लिखी पंक्तियाँ मुझे याद दिलाएँगी कि उदारता, त्याग, सेवा और परोपकार जैसे गुणों को अपनाकर जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

(ग) कवि ने मानव की सीमाओं और कमियों की ओर ध्यान दिलाया है, लेकिन कहीं भी क्रोध नहीं दिखाया। आपको इस कविता का भाव कैसा लगा – व्यंग्य, करुणा, चिंता या कुछ और? क्यों?\

उत्तर:

हाँ, मैं इस बात से सहमत हूँ कि कवि ने मानव की कमियों और सीमाओं की ओर ध्यान दिलाया है, लेकिन कहीं भी क्रोध नहीं दिखाया। इस कविता में मुझे आत्मचिंतन और चिंता के भी भाव महसूस होते हैं। मानव स्वयं को संसार का सबसे बुद्धिमान व शक्तिशाली अंग समझता है। उसमें अहंकार है कि उसने विज्ञान व तकनीकी सहायता से सफलता हासिल कर ली है।

(घ) आपके अनुसार 'दीवारें उठाना' केवल ईंट-पत्थर से जुड़ा काम है या कुछ और भी हो सकता है? अपने विचारानुसार समझाइए।

उत्तर:

'दीवारें उठाना' केवल ईंट-पत्थर से जुड़ा काम नहीं है। कविता के अनुसार इसका प्रतीक अर्थ है मानव जैसे-जैसे उन्नति कर रहा है, वैसे-वैसे अपने संबंधों से दूर होता जा रहा है। संसार की विराटता के विपरीत मानव आत्मकेंद्रित हो जाता है। अपने दिल की भावनाओं को जीवन की आपा-धापी में खो देता है। कभी-कभी अपनी सोच इतनी सीमित कर लेता है कि वह एक छोटे से कमरे में भी अपनों से ही दूर होकर दो दुनिया बना लेता है।

(ङ) मानवता के विकास में सहयोग, समर्पण और सहिष्णुता जैसी सकारात्मक प्रवृत्तियाँ ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ और घृणा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। उदाहरण देकर बताइए कि सहिष्णुता या सहयोग के कारण

समाज में कैसे परिवर्तन आए हैं?

उत्तर:

मानवता के विकास में सहिष्णुता, सहनशक्ति और समर्पण जैसे गुणों का बहुत योगदान है। ये गुण न सिर्फ व्यक्तिगत जीवन को अच्छा बनाते हैं, बल्कि पूरे समाज को भी प्रगति की ओर ले जाते हैं। देश के विकास में सहयोग से सामूहिक प्रयास, समर्पण से निरंतरता व प्रगति और सहिष्णुता से सामाजिक एकता विकसित होती है। ये गुण मिलकर देश और समाज को मजबूत व समृद्ध बनाते हैं। उदाहरण – सहिष्णुता और सहयोग के कारण आज शिक्षा प्रणाली में कई बदलाव आए हैं। शिक्षा अधिक समावेशी हो रही है। विभिन्न सामाजिक व आर्थिक स्तर होने पर भी छात्रों को समान अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने व संसाधनों की कमी को दूर करने के प्रयास हुए हैं।

परंतु सच्चाई यह लगती है कि इस संपूर्ण ब्रह्मांड में हमारा स्थान अत्यंत सूक्ष्म है। मानव और ब्रह्मांड के अनुपात में काफी अंतर है। देश और दुनिया जीतने से पहले स्वयं पर अर्थात अपनी बुराइयों पर विजय प्राप्त करना ही सबसे बड़ी चुनौती है।

अनुमान और कल्पना

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए-

(क) मान लीजिए कि आप एक दिन के लिए पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित कर सकते हैं। अब आप मानव की कौन-कौन सी आदतों को बदलना चाहेंगे? क्यों?

उत्तर:

यदि मुझे एक दिन के लिए पूरे ब्रह्मांड पर नियंत्रण का अवसर मिले तो मैं इंसानों की कुछ आदतों को बदलना चाहूँगी। इसका उद्देश्य दुनिया को बेहत्तर और प्रभावशाली बनाने के लिए होगा।

1. प्रदूषण फैलाने की प्रवृत्ति – मानव जैव और रासायनिक प्रदूषण फैला रहा है जो जीवन के लिए हानिकारक है। मैं सौर ऊर्जा और वायु ऊर्जा के वितरण में समानता सुनिश्चित करती।
2. धरती के अमूल्य संसाधनों की रक्षा करती। पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों को कम करने का प्रयास करती। किसी एक शक्तिशाली देश अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए दुनिया को सीमाओं में बाँधने या बाँटने की प्रवृत्ति को बदलने का प्रयास करती।
3. जाति और धर्म के नाम पर विभाजन और असहिष्णुता की प्रवृत्ति को दूर करती और मानवता को सर्वोपरि रखती।

(ख) यदि आप अंतरिक्ष यात्री बन जाएँ और ब्रह्मांड के किसी दूसरे भाग में जाएँ तो आप किस स्थान (कमरा, घर, नगर आदि) को सबसे अधिक याद करेंगे और क्यों?

उत्तर:

अगर मैं अंतरिक्ष यात्री बन जाँऊ और ब्रह्मांड के किसी दूसरे भाग में चली जाऊँ, तो मैं सबसे ज्यादा अपने घर और देश को याद करूँगी। घर का अहसास सुरक्षा प्रदान करता है। घर रिश्तों से बनता है जहाँ प्यार और अपनापन है। देश से हमारी पहचान है। जिस देश की मिट्टी में जन्म लिया, वह माँ के समान है। अपने घर से जुड़ी एक-एक यादें अनमोल होती हैं और देश हमारी संस्कृति और इतिहास का अहसास कराता है।

(ग) मान लीजिए कि एक बच्चा या बच्ची कविता में उल्लिखित सभी सीमाओं को पार कर सकता या सकती है- वह कहाँ तक जाएगा या जाएगी और क्या देखेगा या देखेगी? एक कल्पनात्मक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।

उत्तर:

एक बच्चे की नज़र से सीमाओं को पार करके यात्रा-वृत्तांत लिखना अनोखा अनुभव होगा। मेरी यात्रा में मेरा पहला पड़ाव घर और मुहल्ला होगा। अपने परिवार, दोस्त, उनकी हँसी, बातें सुनते-सुनते मैं आगे दौड़ती हूँ।

दूसरा पड़ाव – नगर और शहर। ऊँची-ऊँची इमारतें, रंग-बिरंगी दुकानें, पुल और सड़कें।

मैं अलग-अलग भाषाएँ सुनती और लोगों की चहल-पहल देखती हूँ। फिर प्रदेश और देश की ओर उड़ती हूँ। दूसरे राज्यों और फिर दूसरे देशों की ओर। अलग-अलग परिधान, खान-पान, त्योहारों और रीति-रिवाजों को समझते हुए आगे उड़ती हूँ। यहाँ कहीं शांति है तो कहीं संघर्ष, कहीं मेल-जोल तो कहीं विषमता नजर आती है। चौथे पड़ाव में पृथ्वी और ब्रह्मांड हैं।

मैं ऊपर अंतरिक्ष से पृथ्वी को देखती हूँ। पृथ्वी-एक नीला ग्रह, जिसमें जीवन की हर छटा और विविध विशेषताएँ हैं। बादलों के ऊपर उड़ते हुए समुद्र, पहाड़ और जंगल लुभाते हैं। फिर मैं ब्रह्मांड की यात्रा पर निकलती हूँ-अनगिनत तारे, नक्षत्र, ग्रह और आकाशगंगाएँ।

मैं सोचती हूँ कि ब्रह्मांड असीमित है और पृथ्वी के छोटे से घर के कमरे की मेरी दुनिया से अलग एक ओर ब्रह्मांड की विराटता तो दूसरी ओर मन की गहन यादें। इस यात्रा से मैंने सीखा कि सीमाएँ केवल दीवारों या घर के नक्शों में नहीं, बल्कि हमारी सोच में होती हैं। अगर खुले दिल से देखें तो पाएँगे कि मानवता अनंत है और इसकी कोई सीमा नहीं है।

(घ) इस कविता को पढ़ने के बाद, आप स्वयं को ब्रह्मांड के अनुपात में कैसा अनुभव करते हैं? एक अनुच्छेद लिखिए–"मैं ब्रह्मांड में एक… हूँ।"

उत्तर:

"मैं ब्रह्मांड में एक छोटा मानव हूँ। मानव का अनुपात इसकी तुलना में छोटा है। मानव ने अपने दृष्टिकोण और सोच को भी संकुचित कर लिया है। अखंड सृष्टि, आकाशगंगाएँ, तारामंडल, अरब प्रकाशवर्ष, इस विशाल ब्रह्मांड में पृथ्वी एक छोटे-से बिंदु के रूप में है। हमारा आकार लघु है परंतु हम मनुष्य अपनी दार्शनिक शक्ति, जिज्ञासा और बुद्धि के सदुपयोग से विशिष्ट पहचान बना सकते हैं। हमारी खोज, जिज्ञासा और कुछ नया करने की भावना की सीमा नहीं है। मनुष्य अपने छोटे जीवन में अपने वातावरण को सुंदर और स्वच्छ बनाए रखने में सक्षम है। हमें ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए इस जीवन का सम्मान करना चाहिए। ब्रह्मांड या अनंत की विशालता से हमें सबक लेना चाहिए और अपने आपको और बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए। हम सृष्टि के छोटे परंतु अभिन्न अंग हैं और मानवता के पथ पर चलते हुए जीवन को सफल बनाएँ।

(ङ) मान लीजिए कि किसी दूसरे संसार से आपके पास संदेश आया है कि उसे पृथ्वी के किसी व्यक्ति की आवश्यकता है। आप किसे भेजना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर:

यदि दूसरे संसार से संदेश आता कि उन्हें पृथ्वी के किसी व्यक्ति की आवश्यकता है, तो मैं किसी प्रेरक, सहिष्णु और मानवता को धर्म समझने वाले व्यक्ति को भेजती। एक ऐसा व्यक्ति जो निष्पक्ष भाव से पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता और दोनों भागों के बीच संवाद स्थापित करने में सहयोग देता।

(च) कविता में "ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ"जैसी प्रवृत्तियों की चर्चा की गई है। कल्पना कीजिए कि एक दिन केलिए ये भाव सभी व्यक्तियों में समाप्त हो जाएँ तो उससे समाज में क्या-क्या परिवर्तन होगा?

उत्तर:

यदि एक दिन के लिए सभी व्यक्तियों में ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ जैसी प्रवृत्तियाँ समाप्त हो जाएं तो समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन आ जाएँगे। लोगों के बीच बैर, कटुता और विद्वेष की भावना मिट जाएगी। समाज में हर नागरिक उन्नति करेगा और देश समृद्ध व खुशहाल बनेगा। बुरी भावनाओं के मिट जाने से आदर्श स्थापित होंगे और मनुष्य अपनी वास्तविक क्षमताओं व शक्तियों को पहचान पाएगा। संतोष, करुणा, शांति से भरकर जीवन साकार हो जाएगा।

(छ) यदि आपको इस कविता का एक पोस्टर बनाना हो जिसमें इसके मूल भाव–' विराटता और लघुता' तथा 'मनुष्य का भ्रम' – दर्शाया जाए तो आप क्या चित्र, प्रतीक और शब्द उपयोग करेंगे? संक्षेप में बताइए।

उत्तर:

'विराटता और लघुता' तथा 'मनुष्य का भ्रम' पोस्टर बनाने के लिए निम्नलिखित प्रतीकों, शब्दों और चित्रों को प्रयोग होगा-

1. चित्र – आकाशगंगा का चित्र जिसमें नक्षत्र, तारामंडल और सैटेलाइट से ली गई पृथ्वी की तस्वीरें लगाई जा सकती हैं।
2. मनुष्य के चित्र -ध्यान मुद्रा में अंकित व्यक्ति, मानव मस्तिष्क का चित्र।
3. प्रतीक रूप में मस्तिष्क और हृदय को उजागर करेंगे।
4. शब्दों में ब्रह्मांड और मानव आकार, अनंतता, आत्मबोध मानव की लघुता, निजी जीवन, संकुचित सोच, ऊँचे विचार आदि शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'सृष्टि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए-

उत्तर:

सृजन

(सृजन गतिविधि छात्रगण, अध्यापक और माता-पिता की सहायता से कीजिए ।)

(क) कविता में कमरे से लेकर ब्रह्मांड तक का विस्तार दिखाया गया है। इस क्रम को अपनी तरह से एक रेखाचित्र, सीढ़ी या 'मानसिक चित्रण' (माइंड-मैप) द्वारा प्रदर्शित कीजिए। प्रत्येक स्तर पर कुछ विशेषताएँ लिखिए, जैसे-पास- – पड़ोस की एक विशेष बात, नगर का कोई स्थान, देश की विविधता आदि। उसके नीचे एक पंक्ति में इस प्रश्न का उत्तर लिखिए- "मैं इस चित्र में कहाँ हूँ और क्यों?"

कविता में वर्णित कमरे से ब्रह्मांड तक के विस्तार का एक रेखाचित्र (फ्लोचार्ट) यहाँ प्रस्तुत है:

उत्तर:

विराट में व्यक्ति का स्थान: एक चित्रण

स्तर 1: कमरा 🚪

- **विशेषता:** यह मेरा व्यक्तिगत स्थान है, जहाँ मेरी किताबें, मेरे विचार और मेरी अपनी दुनिया है। यहीं से मैं बाहरी दुनिया से जुड़ता हूँ।

↓ स्तर 2: घर 🏠

- **विशेषता:** यह मेरे परिवार का केंद्र है, जहाँ सुबह की चाय पर दिनभर की योजनाएँ बनती हैं और रात को सब एक साथ भोजन करते हैं।

↓ स्तर 3: मुहल्ला 🏘️

- **विशेषता:** यहाँ आस-पड़ोस के लोग एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल होते हैं। शाम को बच्चों के खेलने का शोर और त्योहारों की रौनक इसकी पहचान है।

↓ स्तर 4: नगर (दिल्ली) 🏙️

- **विशेषता:** यह भारत की राजधानी है, जहाँ क़ुतुब मीनार का प्राचीन इतिहास और मेट्रो की आधुनिक रफ़्तार एक साथ मौजूद हैं।

↓ स्तर 5: प्रदेश (दिल्ली)

- **विशेषता:** यह एक केंद्र-शासित प्रदेश है, जो पूरे देश की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बिंदु है।

↓ स्तर 6: देश (भारत) IN

- **विशेषता:** यह भाषाओं, धर्मों, त्योहारों और संस्कृतियों का एक विशाल संगम है, जहाँ "अनेकता में एकता" का भाव बसता है।

↓ स्तर 7: पृथ्वी 🌏

- **विशेषता:** यह हमारा नीला ग्रह है, जो पहाड़ों, महासागरों, जंगलों और करोड़ों जीवों का घर है। यह जीवन का एकमात्र ज्ञात आश्रय है।

↓ स्तर 8: ब्रह्मांड 🌌

- **विशेषता:** यह अरबों आकाशगंगाओं, तारों और ग्रहों का एक अनंत विस्तार है, जिसकी विशालता और रहस्य आज भी हमारी कल्पना से परे हैं।

इस चित्र में मेरा स्थान

मैं इस चित्र में सबसे पहले स्तर, यानी 'कमरे' में हूँ, क्योंकि यही मेरी चेतना और अस्तित्व का तत्काल केंद्र है। यहीं से मैं अपने घर, मुहल्ले, देश और इस अनंत ब्रह्मांड को महसूस करता हूँ और समझने का प्रयास करता हूँ। कविता के अनुसार, मनुष्य इतना विशाल होते हुए भी इतना छोटा है कि वह इसी कमरे में अपने अहंकार और स्वार्थ की दीवारें खड़ी कर लेता है। इसलिए, मेरा स्थान इसी शुरुआती बिंदु पर है, जहाँ से सभी अनुभव और विचार जन्म लेते हैं।

(ख) अगर इसी कविता की तरह कोई कहानी लिखनी हो जिसका नाम हो 'ब्रह्मांड में मानव' तो उसको आरंभ कैसे करेंगे? कुछ वाक्य लिखिए।

उत्तर:

'ब्रह्मांड में मानव' कहानी का आरंभ कविता की भावना को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार किया जा सकता है:

आरंभ 1 (बाहर से भीतर की ओर):

"अरबों आकाशगंगाओं के विराट मौन में, जहाँ तारे किसी धीमी गति की आतिशबाजी में जन्म लेते और मर जाते थे, पृथ्वी नाम का एक छोटा-सा नीला कण तैर रहा था। इस कण पर बसने वाली एक प्रजाति थी 'मानव', जो अक्सर यह भूल जाती थी कि वे एक अनंत कहानी का महज़ एक अक्षर हैं। दिल्ली शहर की एक भीड़ भरी गली के एक मकान में, इसी कहानी का एक पात्र, रमेश, आज इस बात से बेहद नाराज़ था कि उसके हिस्से की मिठाई उसका छोटा भाई खा गया था।"

आरंभ 2 (भीतर से बाहर की ओर):

"उस कमरे में दो दुनियाएँ थीं। एक दुनिया सोफ़े के दाहिने सिरे पर थी और दूसरी बाएँ सिरे पर। दोनों के बीच टीवी का रिमोट एक सीमा की तरह पड़ा था, जिसके लिए एक अनकहा युद्ध छिड़ा हुआ था। उस कमरे के बाहर, उस घर में, उस विशाल नगर में करोड़ों ऐसी ही दुनियाएँ रोज़ बनती और टकराती थीं। और इन सबसे बेखबर, ब्रह्मांड अपनी अनंत शांति में पसरा हुआ था, उस नीले ग्रह को देखते हुए जहाँ एक छोटे से कमरे में दो इंसान खुद को ब्रह्मांड का केंद्र समझ बैठे थे।"

(ग) 'एक कमरे में दो दुनिया रचाता है' पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। अगर आपसे कहा जाए कि आप एक ऐसी दुनिया बनाइए जिसमें कोई दीवार न हो तो वह कैसी होगी? उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर:

'एक कमरे में दो दुनिया रचाता है' पंक्ति मनुष्य के बनाए बँटवारों पर गहरी चोट करती है। अगर मुझे एक ऐसी दुनिया बनाने का अवसर मिले जिसमें कोई दीवार न हो, तो वह ऐसी होगी:

ऐसी दुनिया सिर्फ ईंट-पत्थर की दीवारों से ही मुक्त नहीं होगी, बल्कि मन और दिलों के बीच खड़ी **ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास** की दीवारों से भी पूरी तरह आज़ाद होगी।

- **कोई सीमाएँ नहीं होंगी:** इस दुनिया में देशों के बीच कोई सीमाएँ या बॉर्डर नहीं होंगे। कोई पासपोर्ट या वीज़ा की ज़रूरत नहीं होगी; लोग जहाँ चाहें, वहाँ जा सकेंगे, सीख सकेंगे और बस सकेंगे। ज्ञान, कला और संस्कृति किसी एक देश की संपत्ति न होकर पूरी मानवता की साझा विरासत होगी। हम दिवाली की रोशनी पेरिस में और क्रिसमस का उल्लास दिल्ली में एक साथ मना रहे होंगे।

- **संवेदना ही आधार होगी:** इस दुनिया का सबसे बड़ा नियम 'स्वार्थ' की जगह 'संवेदना' और 'सहानुभूति' होगी। किसी की सफलता पर ईर्ष्या नहीं, बल्कि सामूहिक उत्सव मनाया जाएगा। लोग एक-दूसरे को उनके धर्म, जाति, रंग या भाषा से नहीं, बल्कि केवल इंसानियत के नाते जानेंगे और सम्मान देंगे।
- **संसाधनों का साझा उपयोग:** भोजन, जल और ऊर्जा जैसे संसाधनों पर किसी एक का अधिकार नहीं होगा, बल्कि उनका बँटवारा ज़रूरत के हिसाब से होगा, लालच के हिसाब से नहीं। ज्ञान और तकनीक को छुपाया नहीं जाएगा, बल्कि साझा किया जाएगा ताकि पूरी मानवता की प्रगति हो सके।
- **संवाद, संघर्ष नहीं:** असहमति होने पर हथियार या सेनाएँ नहीं होंगी, बल्कि बैठकर संवाद किया जाएगा। हर किसी की बात को सुना और समझा जाएगा। यहाँ डर और अविश्वास की कोई जगह नहीं होगी।

संक्षेप में, यह एक ऐसी दुनिया होगी जहाँ 'मैं' और 'तुम' की जगह **'हम'** का भाव होगा। यह वास्तव में **'वसुधैव कुटुंबकम्'** (पूरी पृथ्वी एक परिवार है) के सपने का साकार रूप होगी, जहाँ इंसान एक कमरे में दो दुनिया नहीं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड को अपना एक घर समझेगा।

(घ) एक चित्र श्रृंखला बनाइए जिसमें ये क्रम दिखे-

आदमी ⟶ कमरा ⟶ घर ⟶ पड़ोसी क्षेत्र ⟶ नगर ⟶ देश ⟶ पृथ्वी ⟶ ब्रह्मांड
प्रत्येक चित्र में आकार का अनुपात दिखाया जाए जिससे यह स्पष्ट हो कि आदमी कितना छोटा है।

उत्तर:

कविता की रचना

'दो व्यक्ति कमरे में

कमरे से छोटे-

इन पंक्तियों में चिह्न पर ध्यान दीजिए। क्या आपने इस चिह्न को पहले कहीं देखा है? इस चिह्न को 'निदेशक चिह्न' कहते हैं। यह एक प्रकार का विराम चिह्न है जो किसी बात को आगे बढ़ाने या स्पष्ट करने के लिए उपयोग होता है। यह किसी विषय की अतिरिक्त जानकारी, जैसे – व्याख्या, उदाहरण या उद्धरण देने के लिए उपयोग होता है। इस कविता में इस चिह्न का प्रयोग एक ठहराव, सोच का संकेत और आगे आने वाले महत्त्वपूर्ण विचार की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया है। यह संकेत देता है कि अब कुछ ऐसा कहा जाने वाला है जो पाठक को सोचने पर विवश करेगा।

इस कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं, जैसे-अधिकतर पंक्तियों का अंतिम शब्द 'में' है, बहुत छोटी-छोटी पंक्तियाँ हैं आदि।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर कविता की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर:

- कविता की विशेषताओं की सूची भाषा सरल और सहज है। छात्रों को आसानी से समझ आती है।
- कविता में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग है।
- व्यंग्य शैली का प्रयोग है।
- लय और गेयता गुण विद्यमान है।
- अलंकारों का सुंदर प्रयोग है।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ झलकती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए-

क्रम	कविता की विशेषताएँ		कविता की पंक्तियाँ
1.	सरल वाक्य के शब्दों को विशेष क्रम में लगाया गया है।	1.	संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
2.	मुहावरे का प्रयोग किया गया है।	2.	कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में, मोहल्ला नगर में...
3.	छोटे से बड़े की ओर विस्तार देने के लिए शब्दों को दोहराया गया है।	3.	देशों की कौन कहे, एक कमरे में दो दुनिया रचाता है
4.	प्रश्न शैली में व्यंग्य किया गया है।	4.	कमरा है घर में
5.	अतिशयोक्ति से भरा कथन है (बढ़ा-चढ़ाकर कहना)।	5.	यह है अनुपात आदमी का विराट से
6.	मानव के अहंकार पर तीखा व्यंग्य किया गया है।	6.	अपने को दूजे का स्वामी बताता है

उत्तर:

1. 4
2. 1
3. 2
4. 3
5. 5
6. 6

कविता का सौंदर्य

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने समूह में मिलकर खोजिए। इन प्रश्नों से आप कविता का आनंद और अच्छी तरह से ले सकेंगे।

(क) कविता में अलग-अलग प्रकार से ब्रह्मांड की विशालता को व्यक्त किया गया है। उनकी पहचान कीजिए।

उत्तर:

कविता में ब्रह्मांड की विशालता को अलग-अलग प्रकार से व्यक्त किया गया है-

1. कमरे से ब्रह्मांड तक की श्रृंखला द्वारा (भौतिक संरचना)

   व्यक्ति ⟶ छोटा कमरा ⟶ घर ⟶ मुहल्ला ⟶ नगर ⟶ प्रदेश ⟶ देश ⟶ पृथ्वी ⟶ नक्षत्र ⟶ आकाशगंगा ⟶ त ⟶ ब्रह्मांड।
2. गणना या संख्या के आधार पर तुलना

   दो व्यक्ति ⟶ कई देश ⟶ कई पृथ्वी ⟶ अनगिन नक्षत्र ⟶ एक छोटी पृथ्वी ⟶ करोड़ो में एक ⟶ लाखों ब्रह्मांड।
3. आत्म चिंतन – विशाल और विराट ब्रह्मांड में मानव एक बिंदु समान है। वह श्रृंखला की छोटी कडी है परंतु स्वार्थ और अहंकार के कारण अपनी भावनाओं को ही बाँध दिया है। मन की बुराइयों से दीवारें खड़ी कर दी हैं।

(ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
"अपने को दूजे का स्वामी बताता है'
"एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है"

कविता में ये सारी क्रियाएँ मनुष्य के लिए आई हैं। आप अपने अनुसार कविता में नई क्रियाओं का प्रयोग करके कविता की रचना कीजिए।

उत्तर:

नई क्रियाओं कर प्रयोग करके कविता की रचना।

आदमी हैं कमरे में
कमरा है कैमरे में,
कैमरा है नए ऐप में,

नया ऐप है ब्रांडेड मोबाइल में
मोबाइल है पॉकेट में
और आदमी सिमट गया है
एडवांस तकनीक में ....
आदमी का घर है-
पहले वाई-फाई जुड़ता है
फिर बचे रिश्ते
स्क्रीन टाइम में सिमट गई है
बातों की फुहार और
हंसी की बहती लहरें
डिजिटल घड़ी नाम लेती है
चलते कदम
ऊँची दीवारों में उलझा है आदमी ...
पल भर के लिए क्यों नहीं लेता है दम?

आपके शब्द

"सबको समेटे है
परिधि नभ गंगा की'

आपने 'आकाशगंगा' शब्द सुना और पढ़ा होगा। लेकिन कविता में 'नभ गंगा' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है।

आप भी अपने समूह में मिलकर इसी प्रकार दो शब्दों को मिलाकर नए शब्द बनाइए।

उत्तर:

1. आकाशमंडल
2. भाग्यलक्ष्मी
3. सिनेमाघर
4. देवदूत
5. रेलगाड़ी

विशेषण और विशेष्य

"पृथ्वी एक छोटी "

यहाँ 'छोटी' शब्द 'पृथ्वी' की विशेषता बता रहा है अर्थात 'छोटी' 'विशेषण' है। 'पृथ्वी' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है। अर्थात 'पृथ्वी' 'विशेष्य' शब्द है।

अब आप नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य
शब्दों को पहचानकर लिखिए-

उत्तर:

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. दो व्यक्ति कमरे में	दो	व्यक्ति
2. अनगिन नक्षत्रों में	अनगिन	नक्षत्र
3. लाखों ब्रह्मांडों में	लाखों	ब्रह्मांडों
4. अपना एक ब्रह्मांड	एक	ब्रह्मांड
5. संख्यातीत शंख सी	संख्यातीत	शंख
6. एक कमरे में	एक	कमरे
7. दो दुनिया रचाता है	दो	दुनिया

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) कोई ऐसी स्थिति बताइए जहाँ 'अनुपात' बिगड़ गया हो – जैसे काम का बोझ अधिक और समय कम।

उत्तर:

पहली स्थिति – आपातकालीन स्थिति – इस स्थिति में, जैसे कि भूंकप, बाढ़, बचाव दल को बहुत कम समय में लोगों की जान बचाने की आवश्यकता होती है।

(ख) आप अपने परिवार, विद्यालय या मोहल्ले में 'विराटता' (विशाल दृष्टिकोण) कैसे ला सकते हैं? कुछ उपाय सोचकर लिखिए। (संकेत – किसी को अनदेखा न करना, सबकी सहायता करना आदि)

उत्तर:

परिवार में विराटता लाने के उपाय

- **सुनना और समझना** – सभी सदस्यों की बातों को ध्यान से सुनें और उनकी भावनाओं का सम्मान करें।
- **मतभेदों का सम्मान** – असहमति को झगड़े का कारण न बनाकर शांतिपूर्ण चर्चा करें।
- **छोटी गलतियों को माफ करना** – छोटी-छोटी बातों पर विवाद न कर सकारात्मक माहौल बनाए रखें।
- **योगदान की सराहना** – घर के हर छोटे-बड़े कार्य की प्रशंसा करें।

विद्यालय में विराटता लाने के उपाय

- **सबको शामिल करना** – किसी भी विद्यार्थी को अलग-थलग न करें।
- **दूसरे की सफलता में खुशी** – सहपाठियों की सफलता देखकर ईर्ष्या करने के बजाय प्रेरणा लें।
- **सभी का सम्मान** – शिक्षकों के साथ-साथ अन्य कर्मचारियों का भी आदर करें।

- **कमजोर छात्रों की मदद** – मजाक उड़ाने के बजाय उन्हें पढ़ाई में सहयोग दें।

मोहल्ले में विराटता लाने के उपाय

- **सामुदायिक भावना** – सार्वजनिक स्थलों को अपना समझकर साफ-सफाई और देखभाल करें।
- **पड़ोसियों की सहायता** – जरूरत पड़ने पर सहयोग के लिए तत्पर रहें।
- **त्योहारों को मिलकर मनाना** – सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में मिल-जुलकर भाग लें।
- **अफवाहों से दूर रहना** – सुनी-सुनाई बातों पर ध्यान न दें और शांति बनाए रखें।

संक्षेप में

विराटता का अर्थ है **'मैं' से ऊपर उठकर 'हम' की भावना** को अपनाना। यह सोच हमें सिखाती है कि हर व्यक्ति का सम्मान करें और सभी को बराबरी का महत्व दें।

संख्यातीत शंख

"संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है"

शंख का अर्थ है— 100 पद्म की संख्या।

नीचे भारतीय संख्या प्रणाली एक तालिका के रूप में दी गई है।

तालिका के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर खोजिए-

1. जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे क्या कहते हैं?

   उत्तर: जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे **पद्म** कहते हैं।

2. महाशंख में कितने शून्य होते हैं?

   उत्तर: महाशंख में **19 शून्य** होते हैं।

3. एक लाख में कितने हजार होते हैं?

   उत्तर: एक लाख (1,00,000) में **सौ हजार** (100 x 1,000) होते हैं।

4. उपर्युक्त तालिका के अनुसार सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या कौन-सी है?

   उत्तर: **सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या**

   - **सबसे छोटी संख्या:** एक (इकाई)
   - **सबसे बड़ी संख्या:** महाशंख

5. दस करोड़ और एक अरब को जोड़ने पर कौन-सी संख्या आएगी?

   उत्तर: **एक अरब दस करोड़ (1,10,00,00,000)** है।

समावेशन और समानता

जैसे पृथ्वी अनगिनत नक्षत्रों में एक छोटा-सा ग्रह है, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह विशेष आवश्यकता वाला हो या न हो, समाज का एक महत्त्वपूर्ण भाग है।

प्रश्न – एक समूह चर्चा आयोजित करें जिसमें सभी मानवों के लिए समान अवसरों की आवश्यकता पर बल दिया जाए। (भले ही उनका जेंडर, आय, मत, विश्वास, शारीरिक रूप, रंग या आकार – प्रकार आदि कैसा भी हो)

उत्तर:

जैसे पृथ्वी असंख्य नक्षत्रों में एक छोटा सा ग्रह है, वैसे ही जीवन की परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह छोटा हो या रूप-रंग में भिन्न हो, समाज का महत्त्वपूर्ण भाग है। हर व्यक्ति का अपना महत्व और स्थान है और वह समाज का अंग होता है। जैसे विद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी का महत्व होता है और हर विद्यार्थी का शिक्षा पर समान अधिकार होता है।

हर छात्र की अपनी क्षमताएँ, प्रतिभाएँ और परिस्थितियाँ होती हैं। अध्यापक के लिए सभी विद्यार्थी समान होते हैं। छात्रों की क्षमता के अनुसार उनमें कौशल विकसित करने की जिम्मेदारी होती है। इसी प्रकार समाज विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलकर बनता है। हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में काम करता हो, समाज के विकास में योगदान देता है। सभी व्यक्ति मिलकर एक मजबूत और खुशहाल समाज का निर्माण करते हैं।

आज की पहेली

पता लगाइए कि कौन-सा अंतरिक्ष यान कौन-से ग्रह पर जाएगा-

साझी समझ

गिरिजा कुमार माथुर की अन्य रचनाएँ पुस्तकालय या इंटरनेट पर खोजकर पढ़िए और कक्षा में साझा कीजिए।

खोजबीन के लिए

- हम होंगे कामयाब एक दिन
  https://youtu.be/xlTlzqvMa-Q?si=G-0kzG7OfHQ-VMfW
  https://www.youtube.com/watch?v=dJ7BW1CgoWI
- कल्पना जो सितारों में खो गई
  https://youtu.be/Xhv0L2frHn8?si=SmnNPzQgCUk3zh3J
- सुनीता अंतरिक्ष में
  https://youtu.be/I1cDmCthPaA?si=uN1T8DVMArJVVoTV
- ब्रह्माण्ड और पृथ्वी
  https://www.youtube.com/watch?v=b8udjzy7zCA
- हौसलों की उड़ान-मंगलयान
  https://www.youtube.com/watch?v=JTCk48RT1Ws